अमृतवेले मिलूंगी करुँगी यह रूह रिहान

वाह री मैं खुशनसीब आत्मा आज खुशियों का सागर मुझसे मिलने आ रहा....

दुनिया जिसे खोज रही... वो तो कब का मेरा हो गया...

कितना न मुझे अपने पर गुरुर है कि वो मेरा साजन बन गया .....

सजनी से मिलने आ रहा ....

आज मेरे उनसे मुलाक़ात है...

दिल में उमंग और लबो पर मीठी सी मुस्कान है....

मेरा सलोना, मनमोहन, दिलाराम, विश्व का रचता मुझे अपने पलकों में बसाने आ रहा...

हर क्षण मेरे लिए अनमोल होगा जब वो आएगा और अपनी दृष्टि से निहाल करेगा...

वरदानों से मालामाल करेगा...

संग बैठेंगे संग प्रेम आलाप करेंगे ...

शमा पर फ़िदा होंगे परवाने ...

माशूक अपनी बाहों में भरेगा...

नैनों से छलकेंगे प्रेम के आंसू...

मुख पर होगी लाली और दिल मचलेगा ...

जाने न दूंगी बस आया है मेरे आज काबू में...

लाख छुड़ाये वो अपना दामन....

एक न सुनूंगी.. जाउंगी मैं भी नही तो साथ...

अपनी दुल्हनिया को सजाया है तो ले जाये.. देरी किस बात की....

करती हूँ इंतज़ार रोज़ कब तक करू ??और अब...

चलना मुझे उसके घर... हो रही सुहानी भोर..
वो है मेरा सांवरिया मेरा चितचोर....
मिलन की ऋतु आयी है आज ....
बज रहे है मन में अनहद नाज...
मिलूंगी मैं अपने प्रीतम से जानो तुम सब यह राज़....

ॐ शांति